CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

16 वर्ष आईएएस मुख्य परीक्षा

हिन्दी साहित्य

प्रश्नोत्तर रूप में

अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र 2009-2024

हिन्दी साहित्य

प्रश्नोत्तर रूप में

आईएएस मुख्य परीक्षा अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र 2009-2024

यह पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के वैकल्पिक विषय के साथ-साथ राज्य लोक सेवा आयोगों की मुख्य परीक्षाओं तथा अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु भी समान रूप से उपयोगी है।

- पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर को मॉडल हल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रश्नों को हल करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उत्तर सारगर्भित हों तथा पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप हों।
- इस पुस्तक में प्रश्नों से संबंधित अन्य विशिष्ट जानकारियों को भी उत्तर में समाहित किया गया है, ताकि अभ्यर्थी इसका उपयोग न सिर्फ हल प्रश्न-पत्र के रूप में, बल्कि अध्ययन सामग्री के रूप में भी कर सकें।
- इस पुस्तक का उपयोग अभ्यर्थी अपनी उत्तर लेखन शैली में सुधार लाने तथा प्रश्नों की प्रवृत्ति व प्रकृति को समझने के लिए भी कर सकते हैं।

संपादकः एन. एन. ओझा

हलः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र 2009-2024

प्रथम प्रश्न–पत्र

खंड-क : हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास

1. अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप..... 1
2. मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास..... 12
3. सिद्ध-नाथ साहित्य, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि कवियों और दक्खिनी हिन्दी में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप.. 25
4. उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास..... 42
5. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण..... 49
6. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास..... 56
7. भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास.. 62
8. हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास..... 73
9. हिन्दी की प्रमुख बोलियां और उनका परस्पर संबंध.... 85
10. नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएं और उसके सुधार के प्रयास तथा मानक हिन्दी का स्वरूप..... 97
11. मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना..... 105

खंड-ख : हिन्दी साहित्य का इतिहास

12. हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा..... 117
13. हिन्दी साहित्य के प्रमुख काल..... 121
    - आदि काल..... 121
    - भक्ति काल..... 127
    - रीति काल..... 143
    - आधुनिक काल..... 152
14. कथा साहित्य..... 170
15. नाटक और रंगमंच..... 190
16. आलोचना..... 209
17. हिन्दी गद्य की अन्य विधाएं..... 219

द्वितीय प्रश्न–पत्र

खंड-क : पद्य साहित्य

1. कबीर..... 232
2. सूरदास..... 243
3. तुलसीदास..... 254
4. जायसी..... 264
5. बिहारी..... 273
6. मैथिलीशरण गुप्त..... 283
7. जयशंकर प्रसाद..... 290
8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'..... 299
9. रामधारी सिंह दिनकर..... 307

10. अज्ञेय 315
11. मुक्तिबोध 322
12. नागार्जुन 333

खंड-ख : गद्य साहित्य

13. भारतेन्दु 340
14. मोहन राकेश 353
15. रामचंद्र शुक्ल 362
16. निबंध निलय 374
17. प्रेमचंद 381
18. जयशंकर प्रसाद 395
19. यशपाल 403
20. फणीश्वरनाथ रेणु 412
21. मन्नू भंडारी 422
22. एक दुनिया समानान्तर 428

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा
हिन्दी साहित्य
(प्रथम प्रश्न-पत्र)

खण्ड 'क' (हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास)

अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप

प्र. अपभ्रंश और अवहट्ट का तुलनात्मक मूल्यांकन (टिप्पणी)।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2024)

उत्तर: अपभ्रंश और अवहट्ट का तुलनात्मक अंतर मूल रूप से उसके भाषिक तत्व, ध्वनि इकाई और व्याकरणिक कोटियों में परिवर्तन के आधार पर किया गया है।

भाषिक तत्व ध्वनि इकाई में परिवर्तन

- **अपभ्रंश**

(क) दो व्यंजनों के मध्य स्वर के उच्चारण को सुगम बनाने या उच्चारण करने की प्रक्रिया स्वरागम होती है।

जैसे-

- आर्य - आरिय
- वर्ष - वरिस
- क्रिया - किरिया
- त्रिया - तिरिया

(ख) स्वर लोप की प्रक्रिया में शब्दों के आदि, मध्य और अंत में लोप हो सकता है।

जैसे-

- उपविष्टा - बइट्ठ (आदि 'उ' का लोप)
- भविसत - भविस्यदस्त (मध्य 'अ' का लोप)
- एअ - ए (अंत 'अ' का लोप)

(ग) विशेष उच्चारण प्रवृत्ति के कारण कई स्थलों पर ह्रस्व स्वर दीर्घ हो गए हैं।

जैसे-

- कस्स - कासु
- विश्वास - विसास
- जिह्व - जीह
- पतिगृह - पईहर - पीहर (दीर्घकरण)

(घ) अक्षर के स्वरों में आंशिक परिवर्तन अथवा लोप होना।

जैसे-

- गम्भीर - गहिर
- जगन - जहन

- **अवहट्ट**

(क) ऋ का रि होना- तृण-तिन, दृष्टि-दिट्ठी

(ख) 'ञ्' का प्रयोग - ज्ञानिञ।

(ग) 'ष' का उच्चारण 'ख' रहा है। - षण्डित - खंडित, षाण - खान आदि।

(घ) व्यंजनों के अंत में 'अ' दीर्घ हो गया: कार्य - कज्ज, काज और मित्र- मित्त, मीत आदि।

(ड) बालाघात के परिवर्तन के स्वरूप कई स्थानों में दिखाई देते हैं। जैसे भिक्षाकारिका - भिखारी आदि

(च) अनुस्वार का उच्चारण ह्रस्व करके पूर्व स्वर को दीर्घ किया गया। जैसे अञ्चल - आँचल, अंग - आँग, चन्द्र - चाँद आदि।

व्याकरणिक कोटियों में परिवर्तन

- **अपभ्रंश**

(क) संज्ञा रूपों में अंतिम व्यंजन का लोप होना।

जैसे -

- आत्मन् - आत्म
- जगत् - जग

(ख) ऋकारान्त प्रातिपदिक 'अर' अथवा 'इ' में परिवर्तन हो गए।

जैसे -

- पितृ-पिअर
- भ्रातृ-भायर, भाई
- भर्तृ-भत्तार
- मातृ-माई

(ग) दीर्घस्वरान्त प्रातिपदिक अधिकांशत: लुप्त हैं।

जैसे-

- पूजा - पूज्ज
- क्रीडा - कील
- सिकना - सियय
- मालती - मालइ

- **अवहट्ट**

(क) तत्सम् से तद्भव के निर्माण की प्रक्रिया की शुरुआत हुई।

(ख) वचन में दो रूपों का प्रयोग हुआ- एकवचन और बहुवचन।

(ग) लिंग की संख्या भी दो ही है।

(घ) विभक्ति का रूप - कर्ता एकवचन में ओ, ए, उ तथा प्रत्यय और बहुवचन में आ, न्ह प्रयोग हुआ। कर्म एकवचन में उ, ओ, ए, ह, हि, हु। बहुवचन में - न्ह और ति। करण - अधिकरण एकवचन में - अ, ए, ऐ, एण, हि, एहि। बहुवचन में हि, हिं, द्या। संबंध एकवचन में - हुँ, हँ, ह, स्स, ए, आर, एरीर। बहुवचन में - आण। संप्रदान एकवचन में - हिं। बहुवचन - न्ह और तृतीया की अ, ए, एँ, एहि का प्रयोग मिलता है

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा
हिन्दी साहित्य
(प्रथम प्रश्न-पत्र)

खण्ड 'ख' (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा

प्र. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की साहित्येतिहास-दृष्टि के प्रमुख बिन्दुओं को स्पष्ट कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2024)

उत्तर: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखते हुए हिन्दी भाषा के इतिहास पर भी पर्याप्त विचार करते हैं। विदित हो कि, किसी भी साहित्य के इतिहास में उस भाषा का इतिहास भी छिपा होता है और भाषा का इतिहास सामाजिक जीवन की संवेदनशीलता, चिन्तनशीलता, सृजनशीलता और प्रगति का इतिहास होता है।

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' से साहित्येतिहास लेखन की नींव इतनी मजबूत रख दी कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को छोड़कर शेष इतिहासकार सिर्फ उनका अनुकरण करते ही दिखाई देते हैं। शुक्ल जी के इतिहास का अध्ययन जैसे-जैसे गहन से गहनतर होता गया, नई-नई परतें उद्घाटित होती चली गईं।
- आचार्य शुक्ल ने 'हिन्दी शब्द सागर' की भूमिका के रूप में 'हिन्दी साहित्य का विकास' लिखा, जिसे बाद में परिवर्द्धित व परिमार्जित कर सन् 1929 में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नाम से प्रकाशित किया। इसे हिन्दी का प्रथम व्यवस्थित और वैज्ञानिक साहित्येतिहास होने का गौरव प्राप्त है।
- आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी हिन्दी भाषा के स्वरूप, भाषा और इतिहास आदि विषयों पर अपना चिन्तन प्रस्तुत किया है। वे हिन्दी साहित्य का इतिहास में हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के आपसी सम्बन्धों का बराबर ध्यान रखते हैं।
- इसलिए 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' साहित्येतिहास के साथ-साथ भाषा का भी इतिहास है। एक ऐसी भाषा का इतिहास, जिसे 'देश भाषा काल' कहते हैं।
- हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ का सवाल भी भाषा से जुड़ जाता है। यह समस्या भाषा के इतिहास से जुड़ी हुई है। शुक्ल जी के अनुसार प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है।
- इसे वे कभी 'प्राकृताभास हिन्दी' तो कभी 'पुरानी हिन्दी' कहते हैं। दूसरी तरफ वे 'देशभाषा काव्य' से हिन्दी का प्रारम्भ मानते हैं तथा अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' कहने के बावजूद उसे हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि में ही रखते हैं।
- कहा जा सकता है कि अपभ्रंश को लेकर आचार्य शुक्ल के यहां एक अन्तर्विरोध है; इन तमाम अन्तर्विरोधों के बावजूद अपभ्रंश की वास्तविक स्थिति और स्वतन्त्र बोलचाल की भाषा के रूप में हिन्दी के अस्तित्व को वे पहचान सके हैं, यह उनकी इतिहास दृष्टि की बड़ी उपलब्धि है।
- साहित्य, इसका इतिहास और समाज से इनके सम्बन्धों से सम्बद्ध अब तक की अवधारणाओं, व्याख्याओं पर रामचन्द्र शुक्ल की स्थापना सार्थकता के अधिक करीब है।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास की भूमिका में वे लिखते हैं- जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित ही जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अन्त तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य-परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।

निष्कर्ष

वस्तुत: साहित्येतिहासकारों की उत्तरमध्यकाल संबंधी दृष्टि उसके रीति पक्ष पर ही अधिक केंद्रित है। साहित्येतिहास लेखन में केवल साहित्य की प्रधान प्रवृत्तियों एवं कवियों पर ही बल नहीं दिया जाता, बल्कि गौण कवियों एवं प्रवृत्तियों को दिखाना भी साहित्येतिहासकार का लक्ष्य होता है। हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल की आलोचना उसके रीति पक्ष को लेकर अधिक की गई है जबकि उस काल के साहित्य में अन्य प्रवृत्तियां भी मौजूद हैं। अत: आज जब हमारे पास साहित्येतिहास को देखने की अनेक दृष्टियां और सामग्री मौजूद हैं तो इस काल के साहित्य पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

प्र. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-पूर्व हिन्दी साहित्य इतिहास का लेखन। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2023)

उत्तर: हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का वास्तविक आरम्भ 19वीं शताब्दी से माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास लिखकर एक नये युग का समारंभ किया।

- रामचंद्र शुक्ल से पूर्व जिन्होंने हिन्दी साहित्य लेखन का प्रयास किया, उनमें फ्रेंच विद्वान 'गार्सा-द-तासी' का नाम अग्रणी है, उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की शुरुआत की।
- इनके द्वारा 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' नामक ग्रन्थ की रचना की गई, जिसका प्रकाशन दो भागों में किया गया।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा
हिन्दी साहित्य
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

खण्ड 'क' (पद्य साहित्य)

कबीर

प्र. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर हैं' - इस अभिमत के परिप्रेक्ष्य में कबीर की भाषा पर विचार कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2024)

उत्तर: हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीरदास जितने लोकप्रिय हैं, भाषा प्रयोग के कारण उतने ही विवादास्पद भी। उनकी भाषा प्रयुक्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। स्वयं कबीर ने अपनी भाषा के सम्बन्ध में लिखा है-

हम पूरब के पूरबिया जात न पूछे कोय।
हमको तो सोई लखै धुर पूरब का होय॥

- कबीर की भाषा जनता के टकसाल से निकली है, उसमें व्याकरण और शास्त्र का आग्रह नहीं था और शायद इसीलिए कबीर अपनी भाषा के साथ हर तरह की मनमानी कर लेते थे।
- भाषा की सार्थकता का सवाल वहां पैदा होता है, जहां भाव दुर्बल हों। कबीर जनता की भाषा के कवि है, वे अपनी आमफहम भाषा में जनता के बीच प्रचलित प्रतीक, रूपक और उपमाओं को जगह देकर अपने पदों को जीवंत बनाते हैं।

आगि जु लागी नीर महिं, कादौ जरिया झारि।
उत्तर दखिन के पंडिता, मुए विचारि-विचारि॥

- कबीर की भाषा का अक्खड़पन ही उनके व्यंग का प्राण है। वे जब व्यंग पर उतर आते हैं, तब पंडित और मुल्ला, अवधूत और योगी सभी उनके व्यंग से कटकर रह जाते हैं। उनकी भाषा की मार सहना और डटे रहना दोनो संभव नहीं रहता।

मन न रंगाये रंगाये जोगी कपड़ा।
आसन मारि मंदिर में बैठै,
ब्रह्म-छांड़ि पूजन लागे पथरा।
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले,
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैले बकरा।

- कबीर सादगी और सहज भाव पर निरंतर जोर देते हैं, वाह्याचारों की आलोचना करते हैं और इसलिए अगम अगोचर की बात करते हुए भी साधारण जनता के लिए दुर्बोध्य नहीं है। कबीर अपने इसी गुण के कारण पांच सौ वर्षों से जनता के कंठाहार बने हुए हैं। सम्बन्धों का ओछापन भी कबीर की भाषा के लिए रूकावट नहीं बनता-

कबीर कूता राम का, मूतिया मेरा नाऊं।
गलै राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊं॥

- आक्रमण की भाषा तो सिद्धों-नाथों के पास भी थी पर आत्मविश्वास नहीं था। कबीर दंभी नहीं है, उनमें यदि दंभ जैसा कुछ दिखता है तो वह है उनका अखंड विश्वास।

कबीर माया पापणी, हरि सूं करै हराम।
मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम॥

निष्कर्ष

भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया है। कबीर के सामने भाषा कुछ लाचार सी नजर आती है।

प्र. सप्रसंग व्याख्या-

जग हठवाड़ा स्वाद ठग, माया बेसाँ लाई ।
रामचरन नीका गही, जिनि जाइ जनम ठगाइ॥

कबीर माया मोहनी, जैसी मीठी खाँड़।
सतगुरु कृपा भई, नहीं तो करती भाँड़॥

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2023)

उत्तर:

सन्दर्भ: प्रस्तुत दोहा कबीर ग्रंथावली से लिया गया है। इसमें कहा गया है कि इस संसार में जीव विषय-वासना और माया के द्वारा ठग लिया जाता है।

व्याख्या: यह संसार एक बड़ा बाजार है, जिसमें इंद्रियों के स्वाद रूपी ठग हैं और माया रूपी वेश्या भी जीव को ठगने का प्रयास करती है। ऐसी अवस्था में हे जीव! यदि तू दृढ़तापूर्वक ईश्वर के चरणों का सहारा लेगा, तब तो ठीक है, नहीं तो इस बाजार रूपी संसार से विषय-वासना और माया के द्वारा बिना ठगे नहीं बच सकेगा।

- कबीर कहते हैं कि माया में बड़ा आकर्षण है; वह बरबस सबका मन मोह लेती है और वह बड़ी मीठी (अच्छी) लगती है; मुझ पर भी यह मोहिनी डाल देती, पर डाल न सकी। सौभाग्य से सद्गुरु मिल गए और उनकी कृपा हो गयी, इसलिए माया के इस मोहिनी रूप से बच गया, नहीं तो यह मुझे भांड़ बना देती।
- इस दोहे से यह शिक्षा मिलती है कि बिना सद्गुरु के जीव माया के बंधनों से छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकता और सद्गुरु की कृपा प्राप्त करने पर ही इन बंधनों से छुटकारा मिल सकता है।

विशेष

- इसमें रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।
- सद्गुरु के आशीर्वाद के महत्व को बताया गया है।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा
हिन्दी साहित्य
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

खण्ड 'ख' (गद्य साहित्य)

भारतेन्दु

प्र. 'भारत-दुर्दशा' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2024)

उत्तर: 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों को मुख्य रूप से नवजागरण सुधारवादी आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। इन आन्दोलनों ने सामाजिक और धार्मिक कुप्रथाओं पर जमकर चोट की, इन्होंने साम्यवादी व्यवस्था मैं फैली बुराईयां वो चाहे जाति-पाति को हो, हुआ-छूत हों या फिर धार्मिक अंधविश्वासों की, सबकी जमकर आलोचना की।

- इन आन्दोलनों के द्वारा सामाजिक, धार्मिक जो भी सुधार हुआ वह राष्ट्रीय आन्दोलन को गति देने में काफी सहायक हुआ। भारतेन्दु जी ने धार्मिक संकीर्णता को स्वीकार नहीं किया, नहीं वे वेदों के माध्यम से भारत की प्रगति या विकास करना चाहते थे। उनका मानना था कि वेदों-उपनिषदों को शिक्षा का जरूरी भाग बना दिया जाए, अन्य विषयों की भांति इनको भी पढ़ाया जाए, क्योंकि तभी मनुष्य का चतुर्मुखी विकास होगा।
- भारतेन्दु जी ने ब्रिटिश राज्य व्यवस्था पर सीधे प्रहार नहीं किया किन्तु वे अपनी बातों को कहने में कहीं चूकते भी नहीं थे।
- उन्होंने उस समय की स्थितियों से अपने आपको जोड़ने का काम किया, वे अपने अनुभव के आधार पर तथ्यों की अभिव्यक्ति करते हैं। वे महारानी विक्टोरिया तक को लिखना कभी नहीं भूलते- "तुम नृसिंह हो, क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनों पन तुममें है, टैक्स तुम्हारा क्रोध है..... चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनों भुजा हैं।"
- भारतेन्दु जी अपने इस अनुभव की अभिव्यक्ति कई प्रकार से करते हैं। किसी भी रचना का मूल्यांकन उसकी प्रासंगिकता के विषय में ही किया जाता है क्योंकि रचनाकार का उद्देश्य तत्कालीन अवस्थाओं से तो जुड़ा ही रहता है किन्तु भविष्य की आधारशिला भी उस रचना में रखने का प्रयास करता है।
- प्रासंगिकता का सवाल कोई नया नहीं हैं। किसी भी रचना की प्रासंगिकता को सिद्ध करना ही पड़ता है? अगर वह रचना देश, काल, वातावरण के अनुरूप नहीं है, उस रचना में किसी विशेष परिस्थिति को समझने की क्षमता नहीं है नया उसके निदान की ताकत नहीं है तो रचना की प्रासंगिकता पर सन्देह पैदा किया जाने लगता है।
- प्रासंगिकता इस बात पर भी निर्धारित होती है कि क्या वह रचना हमारे वर्तमान जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। या क्या वह रचना मनोभौतिक परिस्थितियों से पूर्ण रूप से सम्बद्ध है? जहां तक रचनाकार का प्रश्न है वह वर्तमान परंपरा और परिवेश से आगे निकलकर अपने अनुभव के आधार पर उस सत्य को अपनी रचना में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है।
- इस तर्क में उसका सम्बन्ध वर्तमान प्रतिक्रियाओं से न होकर मानव माता के अचेतन की मूलभूत संरचना से होता है। इन्हीं स्थितियों में प्रत्येक समय का मानव अपनी पहचान तलाशता है।
- यदि इस पर दृष्टि डाली जाए तो यह बात साफ उभरकर सामने आती है कि भारतेन्दु जी के साहित्य की प्रासंगिकता जितनी कल थी, उतनी आज भी है। यह भारतेन्दु जी के कालजयी प्रतीक का परिणाम था। यदि कल के भारत-दुर्दशा को देखा जाए तो एक बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि यह कल का सत्य नहीं बल्कि वर्तमान समय का सत्य है।
- भारतेन्दु जी की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि भारत की स्वतंत्रता का सूर्य कैसे उगे। यदि भारत-दुर्दशा में चिंतित, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वातावरण का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होगा की सिर्फ नाम का ही परिवर्तन बाकी सब कुछ वैसा ही तो स्पष्ट हो रहा है।

निष्कर्ष

अत: भारतेन्दु ने भी अंग्रेजी-शासन के साथ आई नई सभ्यता, वैज्ञानिक दृष्टि तथा उनकी उपलब्धियों का समर्थन किया। और भारतीयों से उन नीतियों को अपनाने का आग्रह किया है। पर दूसरी और अंग्रेज-सत्ताधारियों की निरंकुशता का विरोध किया। वे इस नाटक के माध्यम से अंग्रेजों की आलोचना करते हैं, जिसके तहत भारतीयों पर बिना किसी ठोस नीति के अत्याचार किया जाता है।

प्र. 'भारत दुर्दशा' एक प्रतीकात्मक नाटक है। विश्लेषण कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2023)

उत्तर: भारत दुर्दशा, भाव प्रतीकों का नाटक है। ये भाव प्रतीकात्मक स्तर पर भारत के लोगों की बुराइयों को सामने लाते हैं। ऊपर से देखने से लगता है कि ये पात्र वर्ग या समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते, लेकिन यदि आलस्य रंगमंच पर आता है तो आलसी भारतीयों के समुदाय का बोध होता है। इसी तरह दरिद्रता भारतीय दरिद्र जनता का प्रतिनिधित्व करती है, जिसकी आबादी सबसे अधिक है।

- इस नाटक के पाँचवें अंक में भारत, भारत दुर्देव, मदिरा, लोभ, आलस्य जैसे भाव प्रतीकों की जगह स्पष्ट मानवीय आकार में पात्र उभरते हैं- बंगाली, महाराष्ट्री, एडीटर, कवि, सभापति और दो देशी सजीव पात्र।